30 mar ravivar page 1 FINAL_Layout 1 28-Mar-25 4:47 PM Page 1

हरिभूमि रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रविवार 30 मार्च 2025

अप्रैल फूल-डे स्पेशल

अप्रैल फूल डे यानी मूर्ख दिवस आज भले ही दुनिया भर में लोग मनाते हैं। लेकिन इसकी शुरुआत को लेकर अनेक तरह की मान्यताएं और किंवदंतियां प्रचलित हैं। अप्रैल फूल डे के इतिहास और इससे जुड़े तथ्यों पर एक नजर।

कल्पना कीजिए अगर हम हंसें नहीं, कोई हमें हंसाए नहीं तो जीवन में कितनी बोझिलता, नीरसता आ जाएगी! इस नीरसता को दूर करने के लिए हजारों साल से जोक्स सुनने और सुनाने की परंपरा बरकरार है। आज के दौर में इसकी महत्ता और बढ़ गई है। अप्रैल फूल हमें अपनों के साथ ऐसे ही जोकिंग का अवसर देता है, जिसे हमें बिल्कुल मिस नहीं करना चाहिए।

सुनिए-सुनाइए जोक्स लाइफ बनेगी हेल्दी-हैप्पी

कवर स्टोरी
लोकमित्र गौतम

डॉक्टरः चिंता मत करो, यह छोटी सी सर्जरी है, घबराने की कोई बात नहीं!
मरीजः लेकिन डॉक्टर, मैं तो ऑपरेशन के लिए नहीं आया था!
डॉक्टरः अरे हां, सॉरी! मुझे आदत हो गई है ऐसा कहने की..!

यह जोक सरप्राइज एलिमेंट (अचानक ट्विस्ट) पर आधारित है, जो दिमाग को एक पल में चौंकाकर हंसा देता है। ऐसा होते ही अचानक पैदा हुआ तनाव गायब हो जाता है, जिससे मूड हल्का और फ्रेश महसूस होता है। कुछ सेकेंड्स का एक जोक या चुटकुला हमें पलभर में तरोताजा कर देता है, क्योंकि जोक्स का प्रभाव हमारे दिमाग और शरीर दोनों पर पड़ता है। जब हम हंसते हैं, तो हमारा मस्तिष्क एंडोर्फिन (खुशी के हार्मोन) छोड़ता है, जिससे तनाव कम होता है और हम रिलैक्स महसूस करते हैं। इसके अलावा, हंसी से ब्लड सर्कुलेशन बेहतर होता है, मांसपेशियों में आराम आता है और मूड फ्रेश हो जाता है। शायद इसी की महत्ता को समझते हुए अप्रैल फूल-डे जैसे आयोजनों की शुरुआत हुई।

हजारों साल पुरानी परंपराः दुनिया में जोक्स और हास्य की परंपरा उतनी ही पुरानी है, जितना पुराना खुद इंसान है, इंसानी सभ्यता है। सबसे पुराने दर्ज जोक्स लगभग 4000 साल पुराने हैं। दुनिया के सबसे पुराने दर्ज जोक्स प्राचीन मेसोपोटामिया (1900 ईसा पूर्व) के हैं। प्राचीन मिस्र (1600 ईसा पूर्व) की सभ्यता में फिरौन के दरबारों में भी जोक्स सुनाए जाते थे। एक मशहूर चुटकुला इस तरह है- 'एक फिरौन अपनी नाव में यात्रा कर रहा था। एक भविष्यवक्ता ने कहा कि वह बहुत लंबी उम्र जिएगा। फिरौन ने पूछा-क्या मैं 100 साल जिऊंगा? भविष्यवक्ता बोला-हां। फिरौन ने पूछा-क्या मैं 200 साल जिऊंगा? भविष्यवक्ता बोला-बिल्कुल! फिरौन खुश हुआ और कहा-तो मैं अमर हूं! भविष्यवक्ता ने कहा-नहीं, लेकिन जब तक तुम मुझसे सवाल पूछते रहोगे, तब तक मैं हां कहता रहूंगा!'

वास्तव में यह राजाओं की चापलूसी और भविष्यवाणियों का मजाक उड़ाने का तरीका था। ग्रीक दार्शनिक प्लेटो और अरस्तू ने भी हास्य को जीवन के महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में देखा है। प्राचीन एथेंस में एक जोकर क्लब था, जिसके दर्जनों जोक्स आज भी मिलते हैं, मसलन- 'एक आदमी डॉक्टर के पास गया और कहा- जब मैं आंखें खोलता हूं, तो मुझे कुछ नहीं दिखता! डॉक्टर बोला- तो आंखें बंद करके देखो!'

भारतीय इतिहास में भी है जिक्रः मिस्र और एथेंस की तरह प्राचीन भारत में भी संस्कृत साहित्य (नाट्यशास्त्र, पंचतंत्र, हितोपदेश, विदूषक पात्र) में हास्य व्यंग्य का भरपूर जिक्र मिलता है। पंचतंत्र की कहानियों में चतुराई भरे जोक्स और व्यंग्य हैं। भारतीय इतिहास में राजाओं के दरबारों में विद्वान विदूषकों जैसे तेनालीराम और बीरबल की भी मौजूदगी रही है, जो अपने बुद्धि-कौशल से सिर्फ दरबार का माहौल ही बोझिल होने से नहीं बचाते थे बल्कि हतप्रभ करने वाली चतुराई भरी बातें करके राजा सहित दरबारियों को हैरान कर देते थे, जिससे सभी तरोताजा महसूस करते थे।

नए दौर में जोक्स का जलवाः जोक्स का आधुनिक और व्यापक दौर 18वीं-19वीं शताब्दी में अखबारों और किताबों में जोक्स छपने से शुरू हुआ। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक रेडियो, टीवी के कॉमेडी शो और स्टैंड-अप कॉमेडी से जोक्स हर जगह और अधिकतर लोगों तक पहुंचने लगे। इस 21वीं शताब्दी में इंटरनेट, सोशल मीडिया और मीम्स के रूप में जोक्स का जलवा हम सब देखते हैं। वास्तव में जोक्स का सबसे तेज और वैरायटी से भरा विकास इसी दौर में हो रहा है।

इसलिए जरूरी हैं जोक्सः सवाल है हर सभ्यता में, हर दौर में यानी जीवन में हमेशा जोक्स क्यों जरूरी माने जाते रहे हैं? जवाब है- जोक्स केवल हंसाने भर के लिए नहीं होते, बल्कि ये मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक संबंध और भावनात्मक संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये हमारे तनाव को कम करते हैं, हमें हंसाते हैं और हंसने से शरीर में एंडोर्फिन (खुशी के हार्मोन) का स्तर बढ़ता है, जो तनाव और दर्द दोनों को गायब करने में मदद करता है। चुटकुलों या जोक्स से इंसान को मनोवैज्ञानिक सुरक्षा मिलती है, क्योंकि कठिन परिस्थितियों में हास्य एक सुरक्षातंत्र की तरह काम करता है, जिससे व्यक्ति समस्याओं को हल्के-फुल्के तरीके से देख पाता है। साथ ही जोक्स हमें सामाजिक रूप से लोगों के साथ जोड़ता है। जोक्स साझा करने से लोगों के बीच नजदीकी बढ़ती है और यह सोशल बॉन्डिंग को मजबूत करता है। साथ ही जोक्स से हमारी क्रिएटिविटी बढ़ती है। हास्य हमें चीजों को नए नजरिए से देखने और समस्याओं का हल अनोखे तरीके से निकालने में मदद करता है। यह कहना भी गलत नहीं होगा कि आधुनिक तनाव भरी जीवनशैली में जोक्स और ज्यादा महत्वपूर्ण हो गए हैं, क्योंकि आज अधिकांश लोग काम के दबाव, सोशल मीडिया, आर्थिक चिंताओं और रिश्तों की उलझनों से घिरे रहते हैं। ऐसे में हास्य और जोक्स बेहद जरूरी हो गए हैं। *

जोक्स सुनाने वाले होते हैं ज्यादा स्मार्ट

ऐसा देखा गया है कि सामान्य तौर पर, अच्छा सेंस ऑफ ह्यूमर किसी व्यक्ति की बुद्धिमत्ता (आईक्यू) और भावनात्मक समझ (ईक्यू) दोनों के बेहतर होने का सबूत होता है। क्योंकि जोक्स बनाने और सुनाने के लिए तेज दिमाग और सोचने की त्वरित क्षमता यानी 'क्विक विट' की जरूरत होती है। यही नहीं मजेदार लोग आमतौर पर बेहतर कम्युनिकेशन स्किल्स और लोगों को बेहतर पढ़ने और समझने की क्षमता रखते हैं। ऐसे लोग चीजों को अलग-अलग दृष्टिकोण से देखने में सक्षम होते हैं, जिससे वे मुश्किल परिस्थितियों से आसानी से निपट लेते हैं। इसलिए, जोक्स और हास्य में रुचि रखने वाले लोग अकसर ज्यादा स्मार्ट होते हैं। कई शोधों में पाया गया है कि महिलाएं मजाकिया और हंसाने वाले पुरुषों की तरफ अधिक आकर्षित होती हैं। जो लोग मजाकिया होते हैं, वे आमतौर पर आत्मविश्वासी होते हैं और पुरुषों का आत्मविश्वास महिलाओं को हमेशा आकर्षित करता है। मजाकिया लोग अकसर दूसरों के साथ घुल-मिल भी बहुत जल्दी जाते हैं, जिससे वे ज्यादा सामाजिक दिखते हैं।

दिलचस्प-विविधतापूर्ण अप्रैल फूल का इतिहास

परंपरा
अंजू जैन

साइबेले के सम्मान में 25 मार्च को मनाया जाने वाला यह उत्सव लोगों को भेष बदलने के लिए प्रेरित करता था। यह खेल और शरारतों का दिन माना जाता था। लोग तरह-तरह की अनूठी वेशभूषा पहन कर एक-दूसरे के साथ मजाक करते थे। वर्ष का पहला दिन यानी उत्सव का दिन, जो रात से अधिक लंबा था और इसे एक नए, बेहतर मौसम और उदास सर्दियों के अंत का जश्न मनाने में बिताया गया था। हिलारिया के दौरान कई प्रकार के खेल और मस्ती मनोरंजन किए जाते थे। इसमें छद्म वेश धारण कर लोग अपनी पसंद के किसी भी व्यक्ति की नकल करते थे।

कैलेंडर बदलाव के साथ शुरुआत

एक लोकप्रिय मान्यता यह है कि इसकी शुरुआत 1582 में हुई। उस समय फ्रांस ने जूलियन से बदल कर

ग्रेगोरियन कैलेंडर शुरू किया था। इस बदलाव से पहले, लोग अप्रैल में नया साल मनाते थे। जब तारीख 1 जनवरी को बदल दी गई, तो भी अज्ञानतावश कुछ लोगों ने इसे मार्च के अंत में मनाना जारी रखा और मजाक का पात्र बन गए और उन्हें 'अप्रैल फूल' कहा गया। *

अप्रैल फूल के दिन यानी पहली अप्रैल को झूठी बातों से मूर्ख बनाने या मजाक करने का सिलसिला सदियों से चला आ रहा है। हालांकि इस दिवस की वास्तविक शुरुआत अज्ञात है, लेकिन इसकी शुरुआत को लेकर तरह-तरह के दिलचस्प और रहस्यमय किस्से प्रचलित हैं।

हास्य कथा से शुरुआत

अप्रैल फूल से जुड़ी एक मान्यता है कि इसकी शुरुआत 16वीं शताब्दी में फ्रांस में हुई थी। अप्रैल फूल दिवस पर सबसे पहला प्रैंक 1 अप्रैल 1698 को खेला गया था। यह मजाक लंदन के एक समाचार पत्र में प्रकाशित हास्य खबर थी। इसमें मजाकिया अंदाज में लिखा गया था कि दिन के समय चंद्रमा पृथ्वी से दिखाई दिया था।

मध्यकाल के हिलारिया से शुरुआत

कुछ इतिहासकारों ने अप्रैल फूल डे को प्राचीन रोमन उत्सव हिलारिया से जोड़ा है। देवताओं की माता

कुछ दिलचस्प तथ्य-मान्यताएं

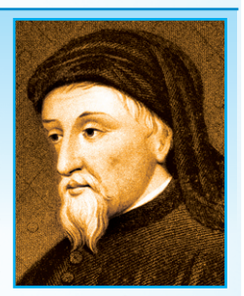
कवि जेफ्री चौसर

मूर्ख दिवस की शुरुआत को लेकर कुछ और मान्यताएं भी प्रचलित हैं।

- ईरान में अप्रैल फूल दिवस, फारसी नववर्ष के 13वें दिन मनाया जाता है, जो आमतौर पर 1 अप्रैल के आस-पास होता है।
- अमेरिकी कार्टूनिस्ट चार्ल्स शुल्ज द्वारा बनाई गई प्रसिद्ध कॉमिक स्ट्रिप 'पीनट्स' में अप्रैल फूल नामक एक पात्र था, जो अपने दोस्तों के साथ शरारतें करता था।
- मध्ययुगीन यूरोप में 'मूर्खों का पर्व' मनाया जाता था, जो मजाक का दिन था। वहां लोग एक नकली बिशप या पोप का चुनाव करते थे और मजाक में शामिल होते थे। कुछ हद तक, अप्रैल फूल दिवस को सर्दियों के अंत और वसंत की शुरुआत को चिन्हित करने वाले त्योहारों से जोड़ा जा सकता है।
- इंग्लिश लेखक और कवि जेफ्री चौसर की द कैंटरबरी टेल्स (1392) में 1 अप्रैल और मूर्खता के बीच पहली बार कनेक्शन दर्ज किया गया था। 'द नंस प्रीस्ट्स टेल' नामक कथा में चैंटिकलर का वर्णन है, जो एक घमंडी मुर्गा है, जिसे एक चालाक लोमड़ी द्वारा धोखा दिया जाता है।
- स्कॉटलैंड में अप्रैल फूल दिवस को पारंपरिक रूप से 'हंटिंगॉक डे' कहा जाता था, जो 'हंट द गॉक' से निकला है, 'गॉक' शब्द स्कॉटिश भाषा में कोयल या मूर्ख व्यक्ति के लिए इस्तेमाल होता है। यह स्कॉटिश परंपरा दो दिवसीय कार्यक्रम बन गई, जिसमें लोगों को नकली कामों (हंकटिंग द गॉक) पर भेजा जाता था, उसके बाद टेल डे मनाया जाता था, जिसमें लोगों की पीठ पर नकली पूंछ या 'मुझे लात मारो' के चिन्ह लगाने जैसे मजाक करना शामिल था।

एंज्वॉयमेंट
शिखर चंद जैन

अप्रैल फूल डे पर हम सब एक-दूसरे के साथ प्रैंक करते हैं, मजा लेते हैं। यहां आपको कुछ ऐसे प्रैंक्स के बारे में बता रहे हैं, जो मशहूर कंपनियों ने बड़े स्तर पर लोगों से किए।

अप्रैल फूल के मजेदार-अनूठे प्रैंक

वर्जिन ऑस्ट्रेलिया एयरलाइंस का डॉग क्रू प्रैंकः वर्ष 2017 में वर्जिन ऑस्ट्रेलिया एयरलाइंस ने अप्रैल फूल के दिन अपने यात्रियों के बीच समाचार फैलाया कि अब उन्हें दुनिया की पहली डॉग इनफ्लाइट क्रू मेंबर टीम मिलेगी। इसमें वे अपने कुत्ते के साथ गलियारे में टहलते हुए, समय बिताने के लिए प्यारे कुत्तों को गले लगाने तक, डॉग क्रू की नई सेवाएं ले सकते हैं। बाद में लोगों को असलियत का पता चला तो उन्हें अपने आप पर खूब हंसी आई।

गूगल का 'माइक ड्रॉप' ई-मेल बटनः गूगल ने वर्ष 2016 में अप्रैल फूल बनाने के लिए जी-मेल में 'माइक ड्रॉप' बटन पेश किया, जिससे इसके यूजर माइक्रोफोन गिराने का जीआईएफ वाला ई-मेल भेज सकते थे। दुर्भाग्य से, इससे काफी गड़बड़ियां हो गईं। गलत मैसेज जाने पर कुछ लोगों की तो नौकरियां चली गईं। गूगल को माफी मांगते हुए तुरंत इसे बंद करना पड़ा।

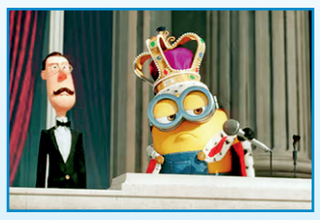

कांच के बॉटम वाला हवाई जहाजः एक बार वर्जिन अटलांटिक एयर लाइंस ने अफवाह फैला दी कि इसके पास अब ग्लास-बॉटम वाले यानी पारदर्शी तल वाले विमान भी हैं। उन्होंने 'दुनिया के पहले ग्लास-बॉटम वाले विमान' के समाचारों के साथ सुर्खियां बटोरीं। नए विमान की तस्वीरें खूब प्रसारित की गईं। उनके इस मजाक पर लोगों ने यकीन भी कर लिया।

टैको लिबर्टी बेलः वर्ष 1996 से अब तक के सबसे बेहतरीन अप्रैल फूल मजाक में शामिल इस शिगूफे में टैको बेल नामक कंपनी ने अखबारों में विज्ञापन देकर कहा कि उसने ऐतिहासिक और नेशनल आइकन लिबर्टी बेल को खरीद लिया है। यह इतना गंभीर और वास्तविक मजाक था कि कुछ सीनेटर भी इस मजाक में फंस गए। बाद में नेशनल पार्क सर्विस ने इस खबर का खंडन करने के लिए एक प्रेस कांफ्रेंस भी की। दोपहर में, फास्ट-फूड चेन ने मजाक को स्वीकार किया और कहा कि वह इस ऐतिहासिक घंटी की देखभाल के लिए 50,000 डॉलर का दान कर रही है।

हवाई अड्डे पर कर दिया कंफ्यूजः वर्ष 1992 में लॉस एंजिल्स हवाई अड्डे पर विमान यात्री ज्यों ही उतरे, वे एक बैनर देखकर चकरा गए कि उन्होंने तो लॉस एंजिल्स की फ्लाइट पकड़ी थी फिर पायलट उन्हें शिकागो कैसे ले आया? इस बैनर पर लिखा था, शिकागो में आपका स्वागत है। यह 85 फीट लंबा पीला बैनर था, जिस पर 20 फीट लंबे लाल अक्षरों में ऐसी घोषणा थी। यह बैनर हॉलीवुड पार्क रेस ट्रैक के ठीक ऊपर लटका हुआ था और आने वाले प्रत्येक यात्री को दिखाई दे रहा था। लेकिन जल्द ही वास्तविक स्थिति सबको बता दी गई।

बीएमडब्ल्यू की सेल्फ-क्लीनिंग कारः 2019 में कार कंपनी बीएमडब्ल्यू ने एक वीडियो जारी कर दावा किया कि उन्होंने एक सेल्फ-क्लीनिंग कार विकसित की है। वीडियो में एक कार को ब्रश और पानी के जेट से खुद ही साफ होते हुए दिखाया गया था। वास्तव में यह एक बड़ा प्रैंक था। *

व्यंग्य कविता
हरीश कुमार 'अमित'

करते रहते घोटाले

करते रहते घोटाले
कितने हिम्मत वाले हैं।
इनके सारे ही 'करतब',
बिल्कुल तवे-से काले हैं।
पुलिस का इनको खौफ नहीं,
नेताजी इनके साले हैं।
यार-दोस्त इनके सारे,
चक्कू-पिस्टल वाले हैं।

एक नहीं, कई दर्जन,
गुर्गे इन्होंने पाले हैं।
इनसे पंगा मत लेना,
नहीं बख्शने वाले हैं।
ब्लैकमनी को कर दें 'व्हाइट',
इनके खेल निराले हैं।
ये छोटे पैग दूर हटाओ,
ये पीते पटियाले हैं।

स्मरण
चंद्रप्रकाश

आगामी 2 अप्रैल को हैंस क्रिश्चियन एंडरसन (1805-1875) का जन्मदिन है। वह एक महान किस्सागो थे, जिन्होंने अपने जीवन में अनेक पुस्तकें लिखीं। लेकिन दुनिया भर में उन्हें उनकी लिखी हुई बच्चों की परीकथाओं की वजह से ज्यादा जाना जाता है। उनकी लिखी एक सौ छप्पन परीकथाएं, नौ किताबों में संकलित हैं। इनके दुनिया भर में एक सौ साठ से अधिक भाषाओं में अनुवाद हुए हैं। कुछ देशों में तो उनकी कहानियां स्कूलों में पाठ के रूप में पढ़ाई भी जाती हैं। ये कहानियां, बच्चों से लेकर बड़ों तक, हर वर्ग के बीच पढ़ी और सराही जाती हैं। यह अपनी तरह की बड़ी मिसाल है। बेशक इस काम में डिज्नी की एनिमेटेड फिल्मों ने भी अपना एक बड़ा योगदान दिया है।

एंडरसन का रचना संसारः एंडरसन का जन्म डेनमार्क में कोपेनहेगन के नजदीक ओडेंस नामक स्थान में हुआ था। गरीब और पिछड़े घर में जन्म लेने के कारण इन्हें जीवन भर संघर्ष करना पड़ा। उन्होंने शुरू में कुछ नाटक लिखे फिर कुछ आत्म-कथात्मक उपन्यास। उनकी पहली कहानियों की किताब 'बच्चों के लिए कहानियां' साल 1835 में छपकर आई।

अंतरराष्ट्रीय बाल पुस्तक दिवसः 2 अप्रैल, विशेष

एक से बढ़कर एक शानदार परीकथाओं के लेखक हैंस क्रिश्चियन एंडरसन के जन्मदिन (2 अप्रैल) को अंतरराष्ट्रीय बाल पुस्तक दिवस के रूप में मनाते हैं। इस अवसर पर उनके रचनात्मक अवदान पर एक दृष्टि।

परीकथाओं का महान चितेरा हैंस क्रिश्चियन एंडरसन

हैंस क्रिश्चियन एंडरसन

इसमें एंडरसन ने एक साथ नौ परीकथाएं संकलित की थीं। उनका कहानियां लिखने का यह काम आगे भी लगातार जारी रहा। एंडरसन का कहानी कहने का तरीका काफी अलग और अनोखा था। वे अपनी कल्पना की ताकत के साथ लोक-कथाओं की सरलता भी पिरो देते थे। इससे उनकी ये कहानियां अपने में विभिन्न संस्कृतियों की बातें भी कहती दिखती थीं। इस विषेषता के कारण उनका नाम यूरोप समेत पूरी दुनिया में प्रसिद्ध हो गया।

जीवन में किया भरपूर संघर्षः एंडरसन महान लेखक थे, लेकिन उनके जीवन में भी कम संघर्ष नहीं थे। एंडरसन बड़े हिम्मती और जुझारू थे। वे अपने अकेलेपन और दुख को बड़ी कुशलता से अपनी कहानियों का हिस्सा बना देते थे। उनकी यह सजगता उनकी लिखी कहानियों को सुंदर बनाती है। उनकी यह विशेषता, एंडरसन के जीवन की घटनाओं और उनकी बहुत सी रचनाओं पर शोध करने वालों ने पता लगाई है। एंडरसन की लिखी बहुत सी कहानियां उनके बाद के बहुत से लेखकों की प्रेरणा बनीं। उन्होंने भी इनका मर्म अपनी तरह से समझते हुए कई अनोखी रचनाएं की हैं।

एंडरसन की कुछ खूबियां और भी थीं, जिससे वे गजब के कलाकार भी माने जाते थे। वे अपने शुरू के दिनों से नाटकों की दुनिया से जुड़े थे। इसके अलावा कलम और ब्रश की मदद से स्याही के चित्र भी बना लेते थे। कागज की कतरनें चिपका कर कोलाज बनाना भी उन्हें पसंद था। इसके अलावा वे अनोखे किस्सागो थे। जो बच्चों के बीच अकसर किस्से सुनाते हुए बातों-बातों में कैंची से किसी कागज को काटकर तरह-तरह की आकृतियां बना देते थे। अंग्रेजी में इस तरीके से बनी आकृतियों को 'सिल्हूट' कहा जाता है। कुछ साल पहले जर्मनी के ब्रेमेन शहर में एंडरसन के ऐसे ही बहुत से तरह-तरह के चित्रों को जुटाकर एक बड़ी प्रदर्शनी में दिखाया गया था।

संजोई गई हैं उनकी स्मृतियांः आज भी एंडरसन की याद और सम्मान में दुनिया के कोने-कोने में तरह-तरह की बहुत सी गतिविधियां होती रहती हैं। इनमें उन पर डाक-टिकट निकालने से लेकर किसी अवसर-विशेष पर प्रदर्शनियां लगाने और जगहों के नाम रखने की बातें भी शामिल हैं। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

टाइट है हिंदी मीडियम

प्रभात रंजन जिस भी विधा में लिखते हैं, अपने अलहदा अंदाज में लिखते हैं। हाल में ही उनकी लिखी एक किताब आई है- हिंदी मीडियम टाइट। इसे किसी एक विधा में बांधकर नहीं देखा जा सकता है। इसे पढ़ते हुए संस्मरण, रेखाचित्र और व्यंग्य शैली में लिखे गए आत्मकथात्मक उपन्यास का आनंद एक साथ लिया जा सकता है। इसमें प्रभात ने दिल्ली के प्रतिष्ठित हिंदू कॉलेज में बिताए अपने छात्र जीवन की उन स्मृतियों को संजोया है, जिससे उस दौर में हिंदी पढ़ने और पढ़ाने वालों की हीन भावना प्रकट होती है। कहना चाहिए कि इसके बहाने लेखक ने उस सामाजिक मानसिकता को भी उजागर किया है, जो एक भाषा का जानकार होते हुए भी दूसरी प्रतिष्ठित मानी जाने वाली भाषा पर कमजोर पकड़ के कारण, पूरे व्यक्तित्व को हीनता बोध से ग्रस्त कर देती है। यह किताब हिंदी प्रेमियों, हिंदी के छात्रों, हिंदी के अध्यापकों और हिंदी साहित्यकारों को ही नहीं, हर उस व्यक्ति को भी पढ़नी चाहिए, जो हिंदी को एक भाषा के रूप में नहीं देखते बल्कि पढ़े-लिखे और संभ्रांत समाज में प्रतिष्ठित होने के लिए गैरजरूरी मानते हैं। *

पुस्तकः हिंदी मीडियम टाइट, लेखकः प्रभात रंजन,
मूल्यः 225 रुपए, प्रकाशकः राजपाल एंड संस, दिल्ली

30 mar ravivar page 2 FINAL_Layout 1 28-Mar-25 3:53 PM Page 1

हरिभूमि रविवार भारती
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रविवार 30 मार्च 2025

विशेष : चैत्र नवरात्र

उपवास को आमतौर पर धार्मिक क्रिया के रूप में जाना जाता है। लेकिन इसके साथ ही उपवास करने से तन निरोग, ऊर्जावान बनता है, मन सकारात्मक होता है और आत्मचेतना में भी वृद्धि होती है। विशेष रूप से चैत्र नवरात्र में धार्मिक आस्था के अलावा उपवास के अन्य वैज्ञानिक लाभों के बारे में भी आपको जानना चाहिए।

तन-मन बनाए शुद्ध आत्मचेतना बढ़ाए उपवास

आस्था-विज्ञान / नरेंद्र शर्मा

उपवास सिर्फ आहार न लेने तक सीमित गतिविधि या प्रक्रिया नहीं है बल्कि यह एक गहरी आध्यात्मिक और वैज्ञानिक प्रणाली है, जो आत्मशुद्धि, मानसिक स्थिरता और आत्मसंयम को बढ़ावा देती है। विभिन्न धर्मों और योग परंपराओं में उपवास को आत्म-उन्नति का साधन माना गया है। उपवास आत्मिक ऊर्जा को बढ़ाने के साथ-साथ शरीर और मन को संतुलित करने का एक प्रभावी माध्यम है।

उपवास के लिए उपयुक्त यह समय

हिंदू पंचांग के अनुसार चैत्र नवरात्र से नया वर्ष प्रारंभ होता है, साथ ही ऋतु चक्र भी बदलता है। इस समय प्रकृति, शरीर और चेतना में एक विशेष समानुपातिक रिश्ता होता है। इसलिए इस दौरान किया गया उपवास केवल धार्मिक-आध्यात्मिक ही नहीं

उसके साथ-साथ शारीरिक एवं मानसिक दृष्टिकोण से भी लाभकारी होता है। चैत्र नवरात्र के वासंतिक मौसम में हम उपवास के दौरान सात्विक भोजन (फल, दूध, साबूदाना, सिंघाड़ा, कुट्टू आटा आदि) करते हैं, जिससे शरीर की ऊर्जा शुद्ध रहती है, नकारात्मकता दूर होती है। इससे ध्यान-साधना और भक्ति में गहराई आती है, जो आत्मिक ऊर्जा बढ़ाने में मददगार होती है। चैत्र नवरात्र के समय मौसम में परिवर्तन होता है, जिससे शरीर का जैविक चक्र प्रभावित होता है। उपवास इस चक्र को संतुलित करता है और शरीर को नए मौसम के लिए तैयार करता है।

बढ़ती है आत्मिक ऊर्जा

उपवास को आत्मशुद्धि की प्रक्रिया कहा जाता है। शरीर, मन और आत्मा की शुद्धि की प्रक्रिया उपवास से होकर गुजरती है। जब व्यक्ति उपवास करता है, तो वह इंद्रियों के नियंत्रण और मानसिक शुद्धि की दिशा में बढ़ता है। यह ध्यान और साधना में गहनता लाने में मददगार है, जिससे चेतना का स्तर ऊंचा उठता है। जब शरीर में भोजन सीमित होता है, तो शरीर ऊर्जा को पाचन में खर्च करने के बजाय मानसिक और आध्यात्मिक कार्यों की ओर मोड़ता है, जिससे आत्मिक ऊर्जा बढ़ती है। उपवास से शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार होता है, क्योंकि उपवास से पाचन तंत्र को विश्राम मिलता है, इससे शरीर विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालता है और चयापचय यानी मेटाबॉलिज्म को संतुलित करता है, इससे शरीर में ऊर्जा का स्तर बढ़ता है।

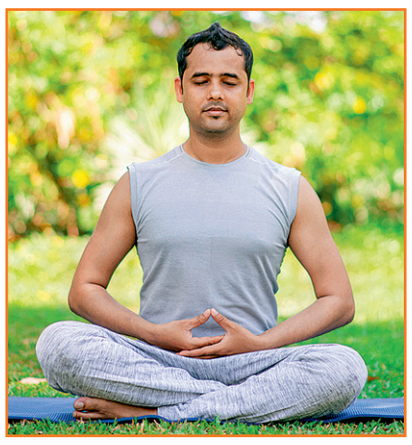

दिव्य ऊर्जा से जुड़ाव

चैत्र नवरात्र में मां दुर्गा के नौ स्वरूपों की आराधना की जाती है। नियमित उपवास और जप-तप से व्यक्ति अपनी चेतना में दिव्य ऊर्जा से जुड़ाव महसूस करता है। इससे ध्यान और प्राण ऊर्जा में वृद्धि होती है। शास्त्रोक्त विधान से किया गया उपवास व्यक्ति को ईश्वर के निकट लाने में सहायक होता है। उपवास एक साधना की तरह कार्य करता है, जिससे व्यक्ति अपनी आध्यात्मिक यात्रा में प्रगति करता है।

बढ़ती है सकारात्मकता

उपवास के दौरान मन अधिक शांत और केंद्रित होता है। नकारात्मक विचार कम होते हैं और आत्मसंयम बढ़ता है। शरीर के ऊर्जा केंद्र या ऊर्जा चक्र सक्रिय होते हैं, जिससे आत्मविश्वास और इच्छाशक्ति बढ़ती है। यह व्यक्ति को भावनात्मक संतुलन में रखता है, जिससे जीवन के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है। हमारा आध्यात्मिक और नैतिक विकास होता है। उपवास से व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं और इच्छाओं में अंतर समझने लगता है, जिससे मोह और भौतिक आसक्तियों से मुक्ति मिलती है। यह करुणा, दया और सेवा की भावना को प्रबल करता है, जिससे सामाजिक जीवन भी समृद्ध होता है।

इस तरह चैत्र नवरात्र के उपवास केवल धार्मिक अनुष्ठान भर नहीं हैं, बल्कि आत्मिक ऊर्जा बढ़ाने, शरीर को शुद्ध करने और मानसिक शांति प्राप्त करने का वैज्ञानिक और आध्यात्मिक साधन हैं। यह शरीर, मन और आत्मा को संतुलित कर जीवन को सकारात्मकता और दिव्यता से भर देता है। *

तन बनता है स्वस्थ-मन रहता है प्रसन्न

उपवास के दौरान हमारे शरीर में सेरोटोनिन और डोपामाइन जैसे न्यूरोट्रांसमीटर्स की मात्रा संतुलित होती है, जिससे मन शांत रहता है और एकाग्रता बढ़ती है। उपवास से कोशिकाओं की मरम्मत की प्रक्रिया तेज होती है, जिससे शरीर अधिक ऊर्जा प्राप्त करता है। आयुर्वेद में कहा गया है कि समय-समय पर उपवास करने से इससे इम्यून सिस्टम मजबूत होता है, जिससे मेटाबॉलिज्म नियंत्रित रहता है। शरीर का ओज बढ़ता है, जिससे व्यक्ति अधिक ऊर्जावान और उत्साही महसूस करता है।

गुड़ी पड़वा-उगादी-चेटीचंड विविध रूपों में मनाते हैं नववर्ष

चैत्र महीने की शुक्ल प्रतिपदा को हिंदू नववर्ष के रूप में मनाया जाता है। भारत के अलग-अलग प्रदेशों में भी इसे अलग-अलग रूपों से जाना जाता है। साथ ही इससे वहां की धार्मिक-सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक परंपराएं भी जुड़ी हैं।

परंपरा
आर.सी. शर्मा

हिंदू चंद्र-सौर कैलेंडर (पंचांग) के अनुसार चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की पहली तिथि से हिंदू नववर्ष का प्रारंभ माना जाता है। देश के विभिन्न हिस्सों में इस दिन को अलग-अलग धार्मिक-सांस्कृतिक पर्व के रूप में मनाया जाता है। इस साल यह तिथि 30 मार्च, दिन रविवार को है। इसलिए ये सभी पर्व इस साल 30 मार्च को मनाए जाएंगे।

जुड़ी है पौराणिक मान्यता: पौराणिक मान्यताओं के अनुसार चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा को ब्रह्मा जी ने सृष्टि का निर्माण किया था। इसलिए प्रत्येक वर्ष चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की पहली तिथि को नवसंवत्सर या नववर्ष के रूप में मनाया जाता है। इस दिन ब्रह्माजी और उनके द्वारा निर्मित सृष्टि के प्रमुख देवी-देवताओं, यक्ष-राक्षस, गंधर्व, ऋषि-मुनियों, नदियों, पर्वतों, पशु-पक्षियों और कीट-पतंगों का ही नहीं, रोगों के उपचारों तक का पूजन किया जाता है।

साजिबू नोंगमा पनबा पर पूजन

विजय का प्रतीक गुड़ी पड़वा: 'गुड़ी' का अर्थ 'विजय पताका' से भी है। इस पर्व से जुड़ी कई पौराणिक एवं ऐतिहासिक मत हैं। कहते हैं कि मराठा राजा शालिवाहन ने विदेशी आक्रमणकारी शकों को हराकर इसी दिन विजय के प्रतीक स्वरूप शालिवाहन शक संवत की शुरुआत की थी। इसलिए यह दिन, मराठी नववर्ष के रूप में भी मनाया जाता है। इसी दिन से चैत्र नवरात्र का प्रारंभ होता है।

एक मत के अनुसार इसी दिन, यानी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को छत्रपति शिवाजी महाराज ने मुगलों को हराया था। इसलिए इस दिन महाराष्ट्र के लोग अपने घरों में गुड़ी यानी विजय पताका फहराते हैं। मान्यता है कि यह झंडा या विजय पताका घरों के परिसर में किसी भी तरह की बुराई को प्रवेश नहीं करने देती। गुड़ी पड़वा में शुद्धिकरण के लिए तेल स्नान किया जाता है। माना जाता है कि इसे अच्छा स्वास्थ्य एवं सकारात्मक ऊर्जा मिलती है। इस दिन महिलाएं प्रवेश द्वारों को अलग-अलग पैटर्न और रंगों की 'रंगोली' से सजाती हैं। नए कपड़े पहनना, खास तौर पर कुर्ता-पजामा और साड़ी पहनना इस परंपरा का अभिन्न अंग है। इस त्योहार का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा गुड़ी को फहराना है। गुड़ी को फहराने के बाद, पुरुष एवं किशोर लड़के गुड़ी तक पहुंचने के लिए मानव पिरामिड बनाते हैं और उसके अंदर रखे नारियल को तोड़ते हैं। यह इस त्योहार का एक महत्वपूर्ण अनुष्ठान है और महाराष्ट्र में लगभग हर जगह इसका पालन किया जाता है।

सुख-समृद्धि की कामना से मनाते हैं उगादी: तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में इस तिथि को सुखी जीवन की अभिलाषा के साथ-साथ समृद्धि और अच्छी फसल की कामना के साथ उगादी पर्व मनाया जाता है। इस दिन को तेलुगू नव वर्ष के रूप में भी जाना जाता है। उगादी पचड़ी, इस त्योहार से जुड़ा एक प्रसिद्ध व्यंजन है, जो इस दिन बनाया जाता है। इस दिन लोग अपने घरों को आम के पेड़ की पत्तियों से बने बंदनवार से सजाते हैं। मंदिरों में जाकर प्रार्थना करते हैं और भगवान से नए साल के लिए आशीर्वाद लेते हैं। एक अन्य मान्यता के अनुसार, भारत के महान गणितज्ञ भास्कराचार्य ने इसी दिन से सूर्योदय से सूर्यास्त तक दिन, महीना और वर्ष की गणना करते हुए 'पंचांग' की रचना की थी।

सिंधी समुदाय के आराध्य झूलेलालजी

सिंधी समुदाय का विशेष पर्व चेटीचंड: हिंदू नवसंवत्सर के दिन ही सिंधी समुदाय के लोग चेटीचंड या भगवान झूलेलाल जयंती मनाते हैं। ये इस दिन को नए साल के रूप में मनाते हैं। इस दिन भगवान झूलेलाल के साथ वरुण देवता की भी पूजा की जाती है। इस दिन सिंधु नदी के तट पर 'चालीहो साहब' नामक पूजा-अर्चना की जाती है। इस दिन भक्त लकड़ी का एक मंदिर बनाकर उसमें एक लोटे से जल अर्पित करते हैं और ज्योति प्रज्वलित करते हैं, इसे बहिराणा साहब कहा जाता है।

मणिपुर का नववर्ष साजिबू नोंगमा पनबा: चैत्र शुक्ल पक्ष की पहली तिथि को मणिपुर में 'साजिबू नोंगमा पनबा' या नववर्ष के रूप में मनाया जाता है। इस दिन को सनमहिज्म धर्म के अनुयायी मनाते हैं। साजिबू नोंगमा पनबा शब्द मणिपुरी भाषा के शब्दों से मिलकर बना है, जिसमें साजिबू का अर्थ महीने का पहला दिन है। इस दिन मणिपुरी लोग संयुक्त परिवार के साथ मिलकर भोज का आयोजन करते हैं। *

प्रासंगिकता
आचार्य दीप चंद भारद्वाज

आज चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से आरंभ हो रहे नवसंवत्सर का भारतीय इतिहास-धर्म और संस्कृति में बहुत महत्व है। इसकी महत्ता पर एक दृष्टि।

विज्ञानसम्मत कालगणना का परिचायक नवसंवत्सर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा

हमारी समृद्ध एवं गौरवशाली स्वर्णिम सांस्कृतिक विरासत में पर्वों का विशेष रूप से महत्व है। भारतीय नव संवत्सर भी एक पुनीत पर्व के समान है, जो हमारी वैदिक धरोहर का प्रतीक है। इस बार भारतीय नव वर्ष 2082, आज (30 मार्च) चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा से आरंभ हो रहा है।

पौराणिक मान्यता: पौराणिक ग्रंथों के अनुसार चैत्र मास के प्रथम दिन ही ब्रह्मा ने सृष्टि की संरचना आरंभ की। हिमाद्रि ज्योतिष के प्रसिद्ध ग्रंथ में वर्णन किया गया है कि

चैत्रमासे जगद ब्रह्म ससर्ज प्रथमे अहनि।
शुक्लपक्षे समग्रंतु तथा सूर्योदये सति।।

अर्थात चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के प्रथम दिन सूर्योदय के समय ब्रह्मा ने जगत की रचना की। इसी दिन से ब्रह्मा दिवस, सृष्टि संवत, वैवस्वत आदि मन्वंतर का आरंभ, सतयुग आदि युग और विक्रम संवत का आरंभ होता है। इस प्रकार यह दिन नव संवत्सर सृष्टि अर्थात ब्रह्मांड का जन्मदिवस है। हमारे ग्रंथों में इसे सृष्टि का आरंभ कहा गया है। यह भारतीय नव संवत्सर सृष्टि निर्माण की प्रक्रिया का आधारभूत स्तंभ है। इस विक्रमी संवत का संबंध सारे विश्व की प्रकृति, खगोल सिद्धांत और ब्रह्मांड के ग्रहों एवं नक्षत्रों से भी है। इसलिए भारतीय कालगणना पंथनिरपेक्ष होने के साथ सृष्टि रचना को दर्शाती है। सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथ वेदों में भी इन सभी तथ्यों का उल्लेख मिलता है।

नवऊर्जा का होता है संचार: चैत्र प्रतिपदा के पावन अवसर पर प्रकृति की शोभा भी चरमोत्कर्ष पर होती है। यह समय शीतकाल एवं ग्रीष्म ऋतु का मध्य बिंदु होता है। संपूर्ण प्रकृति उल्लास एवं सौंदर्य की प्रतिमूर्ति दिखाई देती है। वसंत के आगमन के साथ पतझड़ की कटु स्मृति को भुलाकर नूतन पुष्पों से सजे वृक्ष इस समय प्रकृति का श्रृंगार करते हुए दिखाई देते हैं। पशु-पक्षी, कीट-पतंग, स्थावर-जंगम, सभी प्राणी नई आशा से अपने कर्मों में लगे दिखाई देते हैं। प्रकृति का संपूर्ण वातावरण नई ऊर्जा तथा आनंद से परिपूर्ण होता है। चारों तरफ का वातावरण इस अवसर पर सात्विक एवं सौम्यता से परिपूर्ण होता है। ऐसा लगता है, मानो परम पुरुष अपनी प्रकृति से मिलने आ रहा हो। चैत्र मास को वेदों में मधुमास भी कहा गया है। विश्व में प्रचलित कैलेंडरों में ऐसा कोई भी नववर्ष नहीं है, जो अपनी एक विशिष्टता रखता हुआ प्रकृति के आत्मबोध के साथ संचालित होता हुआ दिखे। हमारा यह नववर्ष प्रकृति के साथ नैसर्गिक रूप से जुड़ा हुआ है। हमारे पूर्वज मनीषी भी चैत्र मास शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नव वर्ष का स्वागत करते आए हैं।

सृष्टि का हुआ था आरंभ: हमारे सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथ वेदों में बताया गया है कि सृष्टि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन आज से एक अरब 96 करोड़ आठ लाख तिरपन हजार एक सौ इक्कीस वर्ष पूर्व आरंभ हुई थी। संसार के जितने भी देश हैं, उनका इतिहास कुछ सौ या हजार वर्ष पुराना है जबकि भारत का इतिहास 1.96 अरब वर्ष पुराना है। सृष्टि के आरंभिक काल से ही भारत संपूर्ण विश्व का वैदिक, आध्यात्मिक ग्रंथों के माध्यम से मार्गदर्शन करता आया है।

ऐतिहासिक महत्ता: यह दिन भारतवर्ष के स्वर्णिम इतिहास से भी जुड़ा हुआ है। इसी दिन भगवान राम का राज्य अभिषेक, युधिष्ठिर का राज्याभिषेक एवं महर्षि दयानंद सरस्वती ने इसी दिन आर्य समाज की स्थापना की थी। सिखों के द्वितीय गुरु अंगद देव का जन्म दिवस भी इसी दिन मनाया जाता है। यशस्वी सम्राट विक्रमादित्य ने इसी चैत्र शुक्ल की प्रतिपदा को विक्रमी संवत की शुरुआत की थी।

होता है नवरात्र आरंभ: चैत्र मास की प्रतिपदा से ही शक्ति और भक्ति के 9 दिन अर्थात नवरात्र आरंभ होते हैं। कलश स्थापना का पहला दिन भी यही है। हमारे समस्त अनुष्ठानों, संकल्पों में जब काल और स्थान को बोला जाता है, तब इसी विक्रमी संवत का वर्ष, मास, पक्ष, तिथि ही बोली जाती है। इस प्रकार यह नववर्ष धार्मिक, आध्यात्मिक दृष्टिकोण से भी सर्वमान्य है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथि को मनाया जाने वाला यह नव वर्ष हमारे राष्ट्र की सांस्कृतिक, पौराणिक, ऐतिहासिक, आध्यात्मिक परंपरा का संवाहक है। यह नव वर्ष विश्व की प्राचीनतम हमारी वैदिक संस्कृति का ध्वजवाहक है। *

पर्यटन-स्थल
समीर चौधरी

दक्षिणी राज्य केरल में नवापुरम मथाथीथा देवालयम नामक एक अनोखा मंदिर है, जहां पुस्तक की प्रतिमा को देवतुल्य मानकर पूजा जाता है। प्रपोयिल नारायणन द्वारा बनवाया गया मंदिर अपनी विशिष्टता के कारण पूरी दुनिया में जाना जाता है। इस मंदिर की विशेषताओं और पूजन विधि के बारे में जानिए।

अनोखा मंदिर जहां होती है पुस्तक की पूजा

केरल में कन्नूर से लगभग 64 किमी. के फासले पर एक छोटे से कस्बे चेरुपुजा के निकट एक हरा-भरा गांव प्रपोयिल है। प्रपोयिल में एक असाधारण मंदिर है, जो संभवतः संसार में अपने किस्म का इकलौता मंदिर है। इसे नवापुरम मथाथीथा देवालयम कहा जाता है, जिसका अर्थ है ईश्वर का धर्मनिरपेक्ष गृह। इस मंदिर में जो देवता हैं, उन्हें पुस्तक की छवि में तराशा गया है। इस मंदिर के निकट ही कंबल्लोर गांव (जिला कासरगोड) के रहने वाले कलाकार संतोष मानसम ने मंदिर की मुख्य प्रतिमा का निर्माण किया है। हालांकि इस मंदिर के निर्माण और इसमें अवस्थित मुख्य मूर्ति की स्थापना का कार्य अक्टूबर 2021 में पूर्ण हुआ, लेकिन पर्यटकों के दर्शन के लिए इस मंदिर के कपाट 4 मार्च 2021 को ही खोल दिए गए थे।

पुस्तकाकार प्रतिमा

अनोखी पूजन विधि: भक्तगण इस मंदिर के गर्भ गृह में पूजा कर सकते हैं, देवता को पुस्तकें अर्पित कर सकते हैं। यहां पूजा के बाद प्रसाद के रूप में पुस्तकें ही मिलती हैं। मंदिर में न कोई पुजारी है न कोई हुंडी और बिना किसी जाति या धार्मिक भेदभाव के मंदिर के द्वार सबके लिए खुले हैं। हर धर्म और जाति का व्यक्ति इसमें पूजा कर सकता है। मंदिर की मुख्य मूर्ति-पुस्तक को एक विशाल प्राकृतिक पत्थर के ऊपर स्थापित किया गया है। इस मंदिर के निर्माण के पीछे यह सिद्धांत और आस्था निहित है कि ज्ञान दैविक होता है। मंदिर इसी ज्ञान दर्शन का प्रसार करता है और उसको प्रोत्साहित करता है ताकि सार्वभौमिक रूप से हर किसी के लिए प्रेम और दया का प्रचार और प्रसार हो सके।

कंक्रीट से निर्मित पुस्तक प्रतिमा: मंदिर का प्रवेश हॉल बेहतरीन पुस्तकालय के रूप में है, जिसमें कई हजार पुस्तकें रखी गई हैं। हॉल की दीवारें मूर्ति कला से सजी हुई है। हॉल में से होकर सीढ़ियां चढ़कर पुस्तक की प्रतिमा तक पहुंचा जा सकता है। मुख्य प्रतिमा कंक्रीट की पुस्तक है, जिसे 30 फीट ऊंचे प्राकृतिक पत्थर के ऊपर स्थापित किया गया है। 'पुस्तक' के पृष्ठों पर तीन वाक्य उकेरे गए हैं- 'ईश्वर ज्ञान है। धर्म व्यापक सोच है। विनम्र बुद्धिमत्ता ही मार्ग है।' प्रवेश हॉल में ही महान कवि चेरुसेरी की प्रतिमा स्थापित है, जो उत्तर मालाबार के कवि थे और जिन्होंने मलयालम महाकाव्य कृष्णगाथा, श्री बुद्ध और पत्थर दीप (ज्ञान का प्रतीक) की रचना की थी।

नवापुरम मथाथीथा देवालयम का सुंदर प्रांगढ़

लेखकों के लिए झोपड़ीनुमा कक्ष: वनीय परिवेश में मंदिर का यह कॉम्प्लेक्स दो एकड़ क्षेत्रफल में फैला हुआ है और इसमें कुछ झोपड़ियां भी हैं, जिन्हें एजुथुपुरा कहते हैं, जिसका अर्थ है लेखन के लिए झोपड़ी। इनमें बाहर से आने वाले लेखक कुछ समय रहकर अपना लेखन कार्य कर सकते हैं। ऐसी वहां तीन झोपड़ियां तैयार की जा चुकी हैं। अभी सात और बनाकर यहां कुल 10 झोपड़ियां बनाने का लक्ष्य है।

वर्षों के श्रम से सपना हुआ साकार: अपनी तरह के इस अनोखे मंदिर निर्माण का सपना, स्थानीय निवासी प्रपोयिल नारायण पिछले 35 वर्षों से देख रहे थे, जो अब जाकर साकार हुआ है। वह अपनी मां के इकलौते पुत्र हैं। उनके जमींदार पिता कोक्कोदन रमण का निधन, उस समय हो गया था, जब प्रपोयिल केवल 9 वर्ष के थे। प्रपोयिल नारायण को विरासत में केवल दो एकड़ जमीन मिली थी। वह 15 वर्ष की आयु से अपने परिवार की जिम्मेदारी उठा रहे हैं। जब वह अपने जीवन के 20वें बसंत में पहुंचे तो वह पुस्तक मंदिर के बारे में सोचने लगे और अपने ड्रीम प्रोजेक्ट के लिए थोड़ा-थोड़ा पैसा जमा करने लगे। इस दौरान विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में उनके अनेक लेख प्रकाशित हुए और वह एक सम्मानित लेखक के रूप में स्थापित हो गए। नारायण ने अब तक 26 किताबें लिखी हैं। उन्होंने मेडिकल लैब टेक्नोलॉजी का प्रशिक्षण प्राप्त किया। इसके बाद वह छात्रों को ट्यूशन पढ़ाने लगे। उनकी मेहनत और लगन का ही नतीजा था कि आज वह चेरुपुजा कस्बे में एक कॉलेज भी संचालित कर रहे हैं। इस संस्था में राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, इतिहास, वाणिज्य, हिंदी और दर्शन के स्नातक और परास्नातक पाठ्यक्रम पढ़ाए जाते हैं। नारायण स्वयं पांच विषयों में पोस्टग्रेजुएट हैं। इस कॉलेज से होने वाली आय से वह अपने मंदिर के लिए लाखों रुपए जुटा लेते हैं। जिसका उपयोग मंदिर के भूमि विकास, मूर्तिकला, झोपड़ी निर्माण और उत्सवों के आयोजन में किया जाता है। नारायण इन सब कार्यों में अभी तक 60 लाख रुपए से अधिक राशि खर्च कर चुके हैं। अब उन्हें दान भी मिलने लगे हैं, लेकिन इससे खर्च का दसवां हिस्सा भी पूरा नहीं हो पाता है।

आयोजित होते हैं सांस्कृतिक उत्सव: इस मंदिर के द्वारा साल में दो सांस्कृतिक उत्सव आयोजित किए जाते हैं। एक अप्रैल में और दूसरा अक्टूबर के महीने में। इन उत्सवों में बड़ी संख्या में पर्यटक हिस्सा लेते हैं। इन उत्सवों में साहित्यिक संगोष्ठियां, शास्त्रीय और लोकनृत्य के प्रदर्शन, पुस्तक विमोचन, सेमिनार, नाटक आदि आयोजित किए जाते हैं। इनके अलावा चार द्रविड़ भाषाओं के प्रसिद्ध लेखकों को सम्मानित भी किया जाता है। इस अच्छे कार्य में नारायण के मित्र और कई ग्रामीण भी उनका सहयोग करते हैं। नारायण की कोशिश है कि मंदिर आत्म-निर्भर संस्था बन जाए। इस सिलसिले में वह उन लोगों से मिलकर चर्चा और प्रयास कर रहे हैं, जो उनके विचार से सहमत हैं।

कवि चेरुसेरी की प्रतिमा

सराहनीय प्रयास: प्रपोयिल नारायण असाधारण व्यक्ति हैं, जिन्होंने अपना पूरा जीवन साहित्य और पुस्तकों के लिए समर्पित कर दिया है। इसमें उनकी पत्नी शीला भी उनका पूरा सहयोग करती हैं। आज जब धर्म, जाति के नाम पर लोगों में दूरियां बढ़ती जा रही हैं, ऐसे में यह पुस्तक मंदिर इस दूरी को खत्म करके प्रेम-भाईचारे को प्रोत्साहित करने का प्रयास कर रहा है और पुस्तकों के महत्व को भी सिद्ध कर रहा है। *